Sanskrit (Honours)
B.A. (1st Part)
(1st Paper)

डॉ० लक्ष्मिनी [illegible]
अतिथि विद्वान
आर० सी० एस० कॉलेज,
गोमोह, बेगूसराय

लघुसिद्धान्त कौमुदी

संज्ञा प्रकरण -

पूर्व में बताया गया है कि अ, इ, उ, ऋ - इन वर्णों के ह्रस्व, दीर्घ, प्लुत, उनके उदात्त, अनुदात्त एवं स्वरित तथा उनके अनुनासिक एवं अननुनासिक - इन भेदों से अठारह भेद हो जाते हैं। कारण यह है कि ये सभी स्वर ह्रस्व हैं अतः इनके ह्रस्व, दीर्घ एवं प्लुत सभी भेद हो जाते हैं। परन्तु सभी स्वर ह्रस्व नहीं होते कुछ के तो दीर्घ भी नहीं होते। अतः सबके भेद अठारह नहीं होते। आचार्य वरदराज आगे कहते हैं -

'लृवर्णस्य द्वादश तस्य दीर्घाभावात्'। अर्थात् 'लृ' के बारह भेद ही होते हैं क्योंकि लृवर्ण

का विधि नहीं होता। इस प्रकार लृ वर्ण के ये बारह भेद हुए -

1. ह्रस्वोदात्तानुनासिक
2. ह्रस्वोदात्ताननुनासिक
3. प्लुतोदात्तानुनासिक
4. प्लुतोदात्ताननुनासिक
5. ह्रस्वानुदात्तानुनासिक
6. ह्रस्वानुदात्ताननुनासिक
7. प्लुतानुदात्तानुनासिक
8. प्लुतानुदात्ताननुनासिक
9. ह्रस्वस्वरितानुनासिक
10. ह्रस्वस्वरिताननुनासिक
11. प्लुतस्वरितानुनासिक
12. प्लुतस्वरिताननुनासिक

'लृ'

इस प्रकार 'लृ' वर्ण के बारह भेद ही हुए। आगे आचार्य वरदराज कहते हैं -

'एचानपि द्वादश तेषां ह्रस्वाभावात्' अर्थात् एच् (ए, ओ, ऐ, औ) के भी बारह भेद होते हैं, क्योंकि उनके ह्रस्व नहीं होते।

Rukmini Ram Mahar